# ❁ 23 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ **ज्ञान-**

1] अभी तुम बच्चों को तो पवित्र गुणवान बनना है। नहीं तो बहुत सजायें खानी पड़ेगी। बाप के साथ-साथ धर्मराज भी है, हिसाब-किताब चुक्तू कराने वाला। ट्रिब्युनल बैठती है ना। पापों की सजायें तो जरूर मिलनी हैं। जो अच्छी रीति मेहनत करते हैं, वह थोड़ेही सजायें खायेंगे। पाप की सजा मिलती है, जिसको कर्मभोग कहा जाता है। यह तो रावण का पराया राज्य है, इसमें अपार दुःख हैं। राम राज्य में अपार सुख होते हैं। तुम समझाते तो बहुतों को हो फिर कोई झट समझ जाते हैं और कोई देर से समझते हैं। कम समझते हैं तो समझो इसने भक्ति देरी से की है। जिसने शुरू से भक्ति की है, वह ज्ञान को भी जल्दी समझ लेंगे क्योंकि उनको आगे नम्बर में जाना है।

2] वह एक वल्लभाचारी पंथ है जो अपने को ऊंच कुल वाले समझते हैं, शरीर को भी टच करने नहीं देते हैं। यह नहीं समझते कि हम विकारी अपवित्र हैं, शरीर तो भ्रष्टाचार से पैदा हुआ है। यह बातें बाप आकर समझाते हैं।

3] यहाँ बाप तुमको कहते हैं– तुमको ऐसा चैतन्य लक्ष्मी-नारायण बनना है। कैसे बनेंगे? मनुष्य से देवता तुम इस पढ़ाई और प्योरिटी से बनेंगे। यह स्कूल है ही मनुष्य से देवता बनने का।

4] उन्हों के आगे जाकर माथा टेकते हैं, समझते हैं, यह राज्य करके गये हैं। परन्तु कब? यह पता नहीं है। फिर कब आयेंगे वा क्या करेंगे, कुछ पता नहीं। तुम जानते हो सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी जो होकर गये हैं, वह हूबहू फिर से बनेंगे जरूर, इस नॉलेज से। वन्डर है ना ! तो अब बाप समझाते हैं– ऐसा पुरूषार्थ करने से तुम सो देवता बनेंगे। एक्टिविटी वही चलेगी जो सतयुग-त्रेता में चली है। कितना वन्डरफुल ज्ञान है। यह बुद्धि में ठहरे भी तब जब दिल की सफाई हो।

5] मेहनत बिगर कोई फल थोड़ेही मिल सकता है। बाप तो पुरूषार्थ कराते रहते हैं। भल ड्रामा अनुसार ही होता है परन्तु पुरूषार्थ तो करना होता है। ऐसे थोड़ेही बैठ जायेंगे– ड्रामा में होगा तो हमसे पुरूषार्थ चलेगा। ऐसी भी जंगली ख्यालात वाले बहुत होते हैं– हमारी तकदीर में होगा तो पुरूषार्थ जरूर चलेगा। अरे, पुरूषार्थ तो तुमको करना है। पुरूषार्थ और प्रालब्ध होती है। मनुष्य पूछते हैं पुरूषार्थ बड़ा या प्रालब्ध बड़ी? अब बड़ी तो प्रालब्ध होती है। परन्तु पुरूषार्थ को बड़ा रखा जाता है जिससे प्रालब्ध बनती है। हर एक मनुष्य मात्र को पुरूषार्थ से ही सब कुछ मिलता है। कोई ऐसे भी पत्थरबुद्धि हो पड़ते जो उल्टा उठा लेते हैं। समझा जाता है इनकी तकदीर में नहीं है। टूट पड़ते हैं। यहाँ बच्चों को कितना पुरूषार्थ कराते हैं। रात-दिन समझाते रहते हैं।

6] परमात्मा की महिमा कितनी है, ज्ञान सागर.... यह महिमा आत्मा की नहीं, परम आत्मा माना परमात्मा की गाई जाती है, फिर उनको ईश्वर आदि कहते हैं। असुल नाम है परमपिता परमात्मा। परम अर्थात् सुप्रीम। महिमा भी बड़ी भारी करते हैं। अभी दिन-प्रतिदिन महिमा भी कम होती है क्योंकि पहले बुद्धि सतो थी फिर रजो, तमोप्रधान बन जाती है। यह सब बातें बाप आकर समझाते हैं। मैं हर 5 हज़ार वर्ष बाद आकर पुरानी दुनिया को नई दुनिया बनाता हूँ।

7] मुख्य हैं ही 4 धर्म– **डिटीज्म, इस्लामीज्म, बुद्धिज्म और क्रिश्चियनीज्म।** बाकी इनसे वृद्धि होती गई है। इन भारतवासियों को तो पता ही नहीं पड़ता कि हम किस धर्म के हैं। धर्म का मालूम न होने कारण धर्म ही छोड़ देते हैं। वास्तव में सबसे मुख्य धर्म है यह। परन्तु अपने धर्म को भूल गये हैं। जो समझू सयाने हैं वह समझते हैं इन्हों का अपने धर्म में इमान नहीं है। नहीं तो भारत क्या था, अभी क्या बना है ! बाप बैठ समझाते हैं– बच्चे, तुम क्या थे ! सारी हिस्ट्री बैठ समझाते हैं। तुम देवता थे, आधाकल्प राज्य किया फिर आधाकल्प के बाद रावण राज्य में तुम धर्म, भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट बन गये। अभी तुम फिर दैवी सम्प्रदाय के बन रहे हो। भगवानुवाच, बाप कल्प-कल्प तुम बच्चों को ही समझाकर ईश्वरीय सम्प्रदाय बनाते हैं।

...2

8] व्यर्थ संकल्प उत्पन्न होने के मुख्य दो कारण हैं– अ) अभिमान और ब) अपमान। मेरे को कम क्यों, मेरा भी ये पद होना चाहिए, मेरे को भी आगे करना चाहिए..... तो इसमें या तो अपना अपमान समझते हो या फिर अभिमान में आते हो, नाम में, मान में, शान में, आगे आने में, सेवा में..... अभिमान या अपमान महसूस करना यही व्यर्थ संकल्पों का कारण है, इस कारण को जानकर निवारण करना ही समाधान स्वरूप बनना है।

## ✺ योग–

1] मुख्य बात है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, बस और कोई बात नहीं। बाप निराकार, बच्चे भी यानी आत्मा भी इस शरीर में निराकार है, और कोई बात ही नहीं उठती। आत्मा का लव तो एक परमपिता परमात्मा के साथ ही है।

2] आत्मा का काम है बेहद के बाप को याद कर पावन बनना। आत्मा पवित्र है तो शरीर भी पवित्र चाहिए। वह मिलेगा नई दुनिया में। आत्मा भल पावन बन जाये, आत्मा को एक परमपिता परमात्मा के साथ ही योग लगाना है। बस, इस पतित शरीर को तो टच भी नहीं करना है।

## ✺ धारणा–

1] अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बस, यही धुन लगी रहे जिससे तुम पावन बन सकेंगे।

2] अपने कैरेक्टर्स जरूर सुधारने हैं। नम्बरवन कैरेक्टर है पावन बनना। देवता तो हैं ही पावन। फिर जब गिर पड़ते हैं, कैरेक्टर्स बिगड़ते हैं तो एकदम पतित बन जाते हैं। अभी तुम जानते हो हमारा तो ए वन कैरेक्टर था। फिर एकदम गिर पड़े। सारा मदार है पवित्रता पर, इसमें ही बहुत डिफीकल्टी होती है। मनुष्य की आंखें बहुत धोखा देती हैं क्योंकि रावण का राज्य है। वहाँ तो आंखें धोखा देती ही नहीं। ज्ञान का तीसरा नेत्र मिल जाता है इसलिए **रिलीजन इज माइट** कहा जाता है।

## ✺ सेवा–

1] मीठे बच्चे– योग द्वारा तत्वों को पावन बनाने की सेवा करो क्योंकि जब तत्व पावन बनेंगे तब इस सृष्टि पर देवतायें पाँव रखेंगे।